भारतीय कृषि के सात दशक

सुरक्षित और सतत कृषि की रणनीति

हमारे कृषि क्षेत्र का 45 प्रतिशत हिस्सा सिंचित हो पाया है। देश में अनाज की पैदावार पांच गुना बढ़ी है। कृषि को और सक्षम किया जा रहा है। हम हाल के दशकों में खेती में कई प्रकार की विभिन्नता लाए हैं। सोयाबीन देश में खाद्य तेल का नम्बर एक स्रोत हो गई है। देश में फलों का उत्पादन अनाज से अधिक है। इस सब के चलते देश के अग्रणी कृषि वैज्ञानिक पद्मभूषण डॉ राजेंद्र सिंह परोदा ने कृषि में कुछ मूलभूत सुधारों की जरूरत पर बल दिया है। भारत में कृषि उत्पादों का बाजार बढ़ने के संदर्भ में उन्होंने बार-बार याद दिलाया है कि अच्छे अनुसंधान केंद्रों के चलते देश में हरित क्रांति आई है।

तरुण कुमार जैन

अधिक फसल देने वाले बीजों, उर्वरकों व मशीनों की निर्धन कृषकों तक पहुँच नहीं होने को कृषक समुदाय में असमानता बढ़ने तथा अनेक निर्धन कृषकों में इस कारण कर्ज़ के बोझ तले दबने, किसानों द्वारा आत्महत्याओं, देश की बढ़ती आबादी के लिए अनाज की बढ़ती जरूरत, गरीबी की हालत से दो-चार हो रही आबादी की बदहाली जैसी समस्याओं के चलते देश में कृषि ढांचे की दिशा-दशा में सुधार की जरूरत पर कम-से-कम दो दशक से चिंतन और चर्चा जारी है।

इन स्थितियों के निराकरण के लिए विशेषज्ञों ने जैविक कृषि, जैविक व पर्यावरण परक तकनीकियों का प्रयोग, जल प्रबंधन, संचयन एवं मृदा गुणवत्ता व नमी को बनाए रखने के प्रयासों को बढ़ावा देने की सलाह दी है। दूसरी तरफ विकसित तकनीकों का प्रयोग करके कृषि लागत घटाने, प्राकृतिक वातावरण को हानि न पहुंचाने की जरूरत को रेखांकित किया गया है। पूर्व कृषि और किसान कल्याण मंत्री राधामोहन सिंह ने देश की पूर्ण खाद्य सुरक्षा व खाद्य आत्मपर्याप्तता प्राप्त करने के लिये कृषि के और अधिक आधुनिकीकरण व विविधिकरण करने की आवश्यकता रेखांकित की है।

भारतीय कृषि में व्यापारिक फसलों के विविधिकरण, वर्षाजल संरक्षण, एग्रो प्रोसेसिंग उद्योगों को प्रोत्साहन, वन संरक्षण, बेकार पड़ी भूमि के प्रयोग व निर्यात संवर्धन के साथ-साथ एक और 'उत्पादकता क्रांति' की आवश्यकता भी महसूस की गई है। हरित क्रांति ने यह सीख दी है कि तकनीकों के प्रयोग के माध्यम से शीघ्रातिशीघ्र उत्पादकता तो बढ़ायी जा सकती है परंतु इस वृद्धि को दीर्घकाल तक सुनिश्चित करने के लिये उपयुक्त संस्थागत एवं सार्वजनिक नीतियों का क्रियान्वयन आवश्यक है।

भारतीय कृषि की सफलता को अन्य सहायक क्षेत्रों (बागवानी, फूलों की खेती, मत्स्यपालन, सेरीकल्चर, पशुपालन, डेयरी, मुर्गीपालन, मधुमक्खी पालन इत्यादि) में भी पहुंचाना आवश्यक है। प्रधानमंत्री ने 2022 तक किसानों की आमदनी दोगुनी करने का लक्ष्य सुझाया है और पूरा सरकारी तंत्र इस दिशा में काम कर रहा है। भारत की कृषि उन्नति में कृषि अनुसंधान का बहुत योगदान रहा है देश में कृषि की उन्नति सराहनीय है।

हमारे कृषि क्षेत्र का 45 प्रतिशत हिस्सा सिंचित हो पाया है। देश में अनाज की पैदावार पांच गुना बढ़ी है। कृषि को और सक्षम किया जा रहा है। हम हाल के दशकों में खेती में कई प्रकार की विभिन्नता लाए हैं। सोयाबीन देश में खाद्य तेल का नम्बर एक स्रोत हो गई है। देश में फलों का उत्पादन अनाज से अधिक है। इस सब के चलते देश के अग्रणी कृषि वैज्ञानिक पद्मभूषण डॉ राजेंद्र सिंह परोदा ने कृषि में कुछ मूलभूत सुधारों की जरूरत पर बल दिया है। भारत में कृषि उत्पादों का बाजार बढ़ने के संदर्भ में उन्होंने बार-बार याद दिलाया है कि अच्छे अनुसंधान केंद्रों के चलते देश में हरित क्रांति आई है।

कृषि में और अधिक अनुसंधान आवश्यक है। देश के कृषि क्षेत्र को आगे बढ़ना है तो निर्यात की दिशा में अग्रसर होना पड़ेगा, इसमें कृषि की बड़ी भूमिका रहेगी। कृषि को बाजार से जोड़ना बहुत आवश्यक हो गया है। कृषि में देश को आगे बढ़ना है पर इस रास्ते में बहुत चुनौतियां है। अनेक प्रमुख कृषि वैज्ञानिकों का मानना है कि खेती के लिए प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन पर ब्रेक लगाते हुए फसलों की उत्पादकता बढ़ाना जरूरी हो गया है।

हाल में एक अमरीकी विश्वविद्यालय में कार्यरत भारतीय मूल के मृदा वैज्ञानिक डॉ. रतन लाल को इस वर्ष के विश्व खाद्य पुरस्कार के लिए मनोनीत किया गया है, उन्हें प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए और खाद्य उत्पादन को बढ़ाने के लिए एक मिट्टी-केंद्रित दृष्टिकोण विकसित करने और मुख्यधारा में लाने के लिए विश्व खाद्य पुरस्कार दिया गया है जिसे कृषि के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार जैसा सम्मान प्राप्त है। डॉ. लाल के योगदान ने छोटे किसानों की उनकी मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करने में मदद करके वैश्विक खाद्य आपूर्ति में वृद्धि की है। मिट्टी विज्ञान में उनके शोध से पता चलता है कि रासायनिक खेती की समस्या का समाधान हमारे पास है। वह उन छोटे किसानों की मदद कर रहे हैं, जो बेहतर प्रबंधन, कम मिट्टी के क्षरण और पोषक तत्वों के पुनर्चक्रण के माध्यम से अपनी जमीन के प्रबंधक हैं। इन खेतों पर निर्भर रहने वाले अरबों लोगों को उनके काम से बहुत फायदा मिला है।'

डॉ. लाल मृदा विज्ञान में अनुसंधान के लिए एक अद्भुत जुनून के साथ काम करने वाले विशेषज्ञ हैं, वह मृदा स्वास्थ्य को बेहतर बनाने, कृषि उत्पादन बढ़ाने, भोजन के पोषण की गुणवत्ता सुधारने, पर्यावरण को पुनर्स्थापित करने और जलवायु परिवर्तन की गति धीमी करने में लगे हैं। उनका मॉडल अनाज की पैदावार बढ़ाता है और उपयोग की गई भूमि क्षेत्र को घटाने पर केंद्रित है। उनके शोध ने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए मिट्टी में वायुमंडलीय कार्बन को कैसे रखा जा सकता है, इसकी बेहतर समझ के साथ-साथ खाद्य उत्पादन में सुधार किया है।

यह मॉडल बताता है कि मृदा स्वास्थ्य को बहाल करने से वर्ष 2100 तक कई लाभ हो सकते हैं, जिसमें दुनिया की बढ़ती आबादी को खिलाने के लिए वैश्विक वार्षिक अनाज की पैदावार को दोगुना करना शामिल है, जबकि अनाज की खेती के तहत भूमि क्षेत्र में 30 प्रतिशत की कमी और उर्वरक खपत आधे से कम करना भी शामिल है। वैज्ञानिकों ने जलवायु परिवर्तन, भू-जल की कमी एवं इसकी गुणवत्ता में आ रही गिरावट, मिट्टी की उर्वरता में आ रही कमी, वनों की कटायी तथा समुद्र के जल स्तर में बढ़ोतरी, विश्व की बढ़ती आबादी की खाद्य एवं पोषण सुरक्षा की चुनौतियों की तरफ ध्यान दिलाया है।

डॉ. परोदा का मानना है कि देश के कृषि ढांचे की रीढ़ छोटे किसानों की टिकाऊ आजीविका के लिए ठोस प्रबंधन की जरूरत है। इसके लिए कृषि से होने वाली उनकी आमदनी को बढ़ाने और उनको सक्षम बनाने की जरूरत है। आज छोटे किसानों के समक्ष कई गंभीर चुनौतियां हैं जिसमें सही दाम न मिलना शामिल है। इन किसानों तक नई वैज्ञानिक खोज की जानकारी पहुचाने के तंत्र को मजबूत बनाने, कृषि में विविधीकरण, मंडियों में सुधार और युवा पीढ़ी को खेती से जोड़ने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों को बहुत कुछ करने की जरूरत है।

उन्होंने वैज्ञानिक विधि से उपलब्ध कृषि जैवविविधता के संरक्षण व प्रयोग में देशों की सहायता तथा उपलब्ध समृद्ध पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण के लिए 'अंतरराष्ट्रीय कृषि जैवविविधता फंड' की स्थापना की जरूरत की तरफ ध्यान दिलाया है। उनकी राय में इस क्षेत्र में मजबूत निजी व सार्वजनिक साझेदारी जरूरी है, तभी स्वस्थ तरीके से आवश्यक आनुवांशिक संवर्धन के रास्ते महत्वपूर्ण कृषि जैवविविधता के विशाल प्रयोग की दिशा में सफलता मिल सकती है। वह मानते हैं कि बिना किसानों की समृद्धि के कृषि के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। कृषि के क्षेत्र में सार्वजनिक और निजी क्षेत्र दोनों के साथ मिलकर कार्य करने से कृषि में सफल क्रांति आ सकती है।

वह बढ़ती आबादी की खाद्यान्न जरूरतों को पूरा करने के लिए बीज सेक्टर के विकास को राष्ट्रीय स्तर पर प्राथमिकता देने की आवश्यकता मानते हैं। सतत क्रांति में बीज की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होगी। राष्ट्रीय स्तर पर बीज क्षेत्र को प्राथमिकता दिए जाने की आवश्यकता है। बीज उत्पादन पर मिशन बनाने की तुरंत आवश्यकता है। गेहूं, चावल की ज्यादा पैदावार देने वाली किस्मों के साथ ही मक्का, बाजरा और कपास की संकर किस्मों के उपयोग से जो सफलता हासिल की गई है, उसे ठोस नीतियों की सहायता से आगे बढ़ाया जा सकता है।

उन्होंने देश में हरित क्रांति के बाद अब फल सब्जी के क्षेत्र में क्रांति की आवश्यकता को रेखांकित किया है। कृषि अनुसंधान और संवर्धन के क्षेत्र में निजी एवं सरकारी उपक्रमों को मिल कर काम करना होगा। कई कृषि अनुसंधान केंद्रों ने अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किया है। कृषि वैज्ञानिकों की मेहनत ने देश को अकाल के दुष्चक्र और पीएल 480 के तहत अमरीका से गेहूं आयात से मुक्त होकर आत्म निर्भर बनाया है।

हाल के वर्षों में देश की कृषि नीति निर्धारण में डॉ. परोदा की बडी भूमिका रही है। वह भारतीय विज्ञान कांग्रेस के अध्यक्ष रह चुके हैं और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित है। जैव विविधता के क्षेत्र में वह जीन बैंक बनाकर महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। कृषि क्षेत्र में हो रही तरक्की, बायोटेक इनोवेशन और विभिन्न मुद्दों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हमें किसानों

को ये समझाना होगा कि बायोटेक्नोलॉजी का मतलब सिर्फ जीएम टेक्नोलॉजी नहीं है। उनकी अध्यक्षता में गठित विशेषज्ञ समिति ने किसानों की आय दोगुनी करने के सरकार के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उत्पादन में वृद्धि, कृषि प्रणालियों में पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ विविधीकरण, इनपुट लागत में कमी, कम ब्याज दर पर ऋण की उपलब्धता, बाजारों से सीधे जुड़ाव की सिफारिशें की हैं। 'सुरक्षित और सतत कृषि के लिए नीतियां और कार्य योजना' शीर्षक वाली यह रिपोर्ट देश में कृषि विकास को गति देने की रणनीतियों का दस्तावेज़ है।

विशेषज्ञ मानते हैं कि आज भारत विश्व स्तर पर संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के मामले में केंद्रीय भूमिका निभाने की स्थिति में है, भारत में सफलता के बिना वैश्विक स्तर पर गरीबी और भूख दोनों की मौजूदा गंभीर स्थिति से मुक्ति संभव नहीं लगती। इसलिए, कुछ साहसपूर्ण नीतियां अपना कर संसाधनों के ज्यादा कुशल उपयोग, पोस्ट-प्रोडक्शन, मूल्य शृंखला, हितधारकों के साथ प्रभावी साझेदारी, विशेष रूप से निजी क्षेत्र के साथ प्रभावी साझेदारी, और राष्ट्रीय और वैश्विक बाजार दोनों से लिंकेज सुनिश्चित करने के लिए नई प्रौद्योगिकियां और नवाचार अपनाने की आवश्यकता है।

स्पष्ट है कि विकास के लिए कृषि अनुसंधान और नवाचार के लिए धन का आवंटन दोगुना करना होगा, कृषि क्षेत्र में ऐसे निवेश से अभी भी अन्य विकास क्षेत्रों की तुलना में उच्चतम रिटर्न (10 गुना से अधिक) मिलती है। इसके अलावा, हरित क्रांति क्षेत्रों के बाहर (पूर्वी और उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में) विशेष रूप से सामाजिक प्रगति सूचकांक (एसपीआई) में सुधार के लिए पूंजी निवेश एक सदाबहार और सतत क्रांति सुनिश्चित करने के लिए अत्यधिक वांछित हो जाता है।

सतत विकास लक्ष्यों के अलावा, किसानों की आय दोगुनी करने की भारत की प्रतिबद्धता एक प्रमुख नीतिगत पहल है, इसके लिए कम इनपुट लागत, टिकाऊ कृषि विविधीकरण और कुशल उत्पाद प्रबंधन के साथ तथा उत्पादन में वृद्धि पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, इसमें मूल्यवर्धन भी शामिल है, और किसानों को मंडी से जोड़ने के लिए बेहतर विकल्प भी। जाहिर है, ये वर्तमान राष्ट्रीय कृषि नीतियों को किसान-समर्थक बनने के लिए और सभी की समृद्धि के लिए उच्च कृषि विकास सुनिश्चित करने के लिए व्यापक बदलाव की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।

विशेषज्ञों की मान्यता है कि वर्तमान में किसान सर्वाधिक तनावग्रस्त वर्ग हैं, उनकी आय उनकी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है। उन्हें अच्छी भूमि, स्वस्थ मिट्टी, पर्याप्त और अच्छी गुणवत्ता वाला पानी, प्रमुख जरूरी संसाधनों की समय पर आपूर्ति, प्रौद्योगिकियों की आवश्यकता होती है। तभी वह उच्च और कुशल उत्पादन, अच्छी और सही समय पर विस्तार सेवाएं, कम ब्याज दर पर ऋण की आसान उपलब्धता, राष्ट्रीय और वैश्विक बाजारों तक पहुंच हासिल कर सकते हैं और समाज में यथायोग्य सम्मान और प्रतिष्ठा पा सकते हैं। परोदा समिति की रिपोर्ट ऐसी नई रणनीति और नीतिगत सुधारों का दस्तावेज़ है जिनका लक्ष्य कृषि विकास में तेजी लाना, सतत विकास लक्ष्य प्राप्त करना और किसानों की आय को दोगुना करना है, जिसमें 'किसान सबसे आगे' (फार्मर फर्स्ट) की सोच है। पूरी कोशिश भारतीय कृषि को अधिक उत्पादक, सुरक्षित (लचीला) तथा आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाने की है। इस तरह कृषि क्षेत्र में लगे लोगों की आमदनी में सुधार और खेती तथा खेती आधारित उद्यमों में रोज़गार के सृजन की रफ्तार बढ़ सकती है। यह उद्देश्य तभी हासिल होगा साहसिक दृष्टि, और साहसिक नीतियां और दृढ़ रणनीति अपनाई जाए। भारत में कृषि विकास के प्रयास खाद्यान्न सुरक्षा हासिल करने के बाद से पटरी से उतर गए हैं। इस दौर में प्रतिभा और उपलब्ध तकनीकी नवाचारों के बावजूद कृषि क्षेत्र के लिए नीतिगत समर्थन की कमी के चलते कृषि विकास थम सा गया है।

राष्ट्रीय कृषि नीति (2000) के संकल्प के अनुरूप नई पहलों को बड़े पैमाने पर अपनाने लायक बनाने और कृषि विकास की दर को चार प्रतिशत से ऊपर लाने के लिए, इस रिपोर्ट में सुझाए गए सुधारों और नए कार्यक्रमों को लागू करने के लिए स्पष्ट प्राथमिकताओं और प्रतिबद्धताओं के साथ निवेश में वृद्धि की आवश्यकता होगी। समिति की सिफारिशों के पीछे केवल तकनीकी समाधान प्रदान करने और छुटपुट सुधार करने की सामान्य सोच नहीं है, इनका उद्देश्य कृषि के त्वरित विकास और सतत विकास के माध्यम से भारत को नई ऊंचाइयों पर ले जाना है।

किसानों की विविध जरूरतें पूरी करने के लिए विशेषज्ञों द्वारा सुझाई रणनीति के लक्ष्यों में उत्पादन में वृद्धि के माध्यम से किसानों की आय को दोगुना करना, कृषि प्रणालियों में विविधीकरण जो तकनीकी नवाचारों (वैज्ञानिक या किसान-आधारित हो) को बढ़ाकर, पर्यावरण के अनुकूल इनपुट लागत में कमी है। बाजारों से सीधे जुड़ाव के माध्यम से कम ब्याज दर पर ऋण की उपलब्धता, मूल्य संवर्धन और बेहतर आय शामिल हैं। यह रणनीति आवश्यक नीतिगत सुधारों और राष्ट्रीय और वैश्विक भागीदारी के साथ-साथ वैज्ञानिक, तकनीकी और संस्थागत नवाचारों के उपयोग पर केंद्रित है।

रिपोर्ट में नई उपलब्धियों के लिए विज्ञान के प्रयोग के नए अवसरों पर प्रकाश डाला गया है: सटीक कृषि, जैव प्रौद्योगिकी, सेंसर प्रौद्योगिकी, जैव सूचना विज्ञान, जलवायु-स्मार्ट कृषि, रोबोटिक्स, ड्रोन, बिग-डेटा प्रबंधन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, आदि। समिति का दृढ विश्वास है कि लाभ बढ़ाने के लिए विश्वास जगाने वाली प्रौद्योगिकियों को बड़े पैमाने पर अपनाया जा सकता है, ऐसी प्रौद्योगिकियों में नए/ गैर-पारंपरिक क्षेत्रों में विभिन्न फसलें उगाना, संकर प्रौद्योगिकी का दोहन, जैव प्रौद्योगिकी का उपयोग (विशेष रूप से जीएम फसलें), संरक्षण कृषि, भूमि का विज्ञान सम्मत उपयोग और पर्यावरणीय क्षेत्रीय योजना, सटीक खेती के लिए खेत मशीनीकरण, मिट्टी की गुणवत्ता में बिगाड़ को उलट देना, मिट्टी की सेहत में सुधार (विशेष रूप से मिट्टी में कार्बनिक कार्बन की मात्रा की बहाली के माध्यम से), पानी के उपयोग की दक्षता को दोगुना करना, पोषक तत्वों के उपयोग में सुधार, बायोएनर्जी और बायोफ्यूल उत्पादन, ज्ञान संवर्धन के लिए आईसीटी आदि उल्लेखनीय हैं।

समिति ने कृषि के प्रमुख उत्पादन क्षेत्रों से संबंधित विशिष्ट सिफारिशें की हैं, इनमें प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, फसलें, बागवानी, पशुधन, मत्स्य पालन और कृषि-पारिस्थितिक आधारित भूमि उपयोग योजना, युवाओं और महिलाओं की भूमिका, निजी नीतिगत सुधारों के लिए कार्य योजना के साथ क्षेत्र की भागीदारी, संस्थागत तंत्र और सुधार, ज्ञान प्रसार और क्षमता निर्माण और कुछ रचनात्मक नवाचार क्षेत्र शामिल हैं जो किसानों की आय पर वांछित प्रभाव के साथ कृषि विकास में तेजी लाने की विशेष क्षमता रखते हैं।

समिति ने कृषि में सार्वजनिक और निजी दोनों तरह का पूंजी निवेश बढ़ाने के लिए नीतिगत सुधारों की तात्कालिक आवश्यकता बताई है, विशेष रूप से पूर्वी, उत्तर-पूर्वी, शुष्क और तटीय क्षेत्रों में जहां भविष्य में अधिक टिकाऊ हरित क्रांति संभव है। सिफारिशों में किसानों को ऋण लेने में आरही दिक्कतें कम करने, किसानों और युवा उद्यमियों को कम ब्याज दर (4%) वाला कर्ज़ सुलभ करने और किसान बैंकों जैसे अधिक वित्तीय संस्थानों का निर्माण, ग्रामीण (सड़क, बिजली) में निवेश बढ़ाना और गिरवी रखने वाले गोदामों, गुणवत्ता वाले बीजों का उत्पादन और उपलब्धता सहित रोपण सामग्री, सुरक्षित और प्रभावी रसायनों की उपलब्धता, कस्टम भाड़े के आधार पर फार्म मशीनरी, खाद्य प्रसंस्करण सुविधाएं, आदि जो सामाजिक प्रगति सूचकांक (एसपीआई) को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण हैं, एसडीजी प्राप्त करने के लिए एक प्रमुख जरूरत के रूप में सुझाया है।

कृषि इनपुट सब्सिडी को युक्तिसंगत बनाने और सब्सिडी राशि प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण तंत्र के माध्यम से किसानों के बैंक खातों में भेजने की आवश्यकता है। मिट्टी स्वास्थ्य कार्ड के आधार पर किसानों को खाद के सही उपयोग के लिए सब्सिडी की राशि नकदी उनके बैंक खातों में सीधे जमा करने की तरह बिजली और सिंचाई सब्सिडी के समझदारी पूर्वक उपयोग को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। समिति ने मूल्य स्थिरीकरण कोष को सुदृढ़ करने का सुझाव दिया है और एक क्रेडिट जोखिम प्रबंधन निधि का निर्माण करने का सुझाव दिया है तथा बागवानी फ़सलों, पशुधन और मत्स्य पालन के बीमा को प्रधानमंत्री आवास बीमा योजना जैसा महत्व देने की आवश्यकता बताई है।

प्रस्तावित रणनीति का उद्देश्य छोटी जोत वाले किसानों की आजीविका के लिए स्थायी कृषि को प्राप्त करने के साथ-साथ पिछले कुछ दशकों में हुई हरित, नीली, सफेद आदि कृषि क्रांतियों के बावजूद भारत में गरीबी, भुखमरी और कुपोषण के मुद्दों को दूर करने के लिए स्थायी कृषि को प्राप्त करने के लिए नीतिगत पुनर्संरचना और त्वरित कार्य योजना का सुझाव देना है।

डॉ परोदा की मान्यता है कि समुचित नीतिगत माहौल के जरिए नई तकनीकों और नवाचारों को अपना कर और आगे बढ़ाते हुए सभी हितधारकों की सहभागिता से कृषि विकास को गति मिल सकती है। सतत विकास लक्ष्यों के एजेंडे में निहित प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण को सुनिश्चित करते हुए गरीबी, भुखमरी और कुपोषण के तिहरे बोझ को दूर करने के लिए स्थायी, अभिनव और लाभदायक कृषि रणनीतियों को अपनाना जरूरी है।

डॉ. रतन लाल की सोच किसानों के संकट को दूर करने और उनकी आय बढ़ाने और हालात सुधारने के लिए पुरानी कृषि परंपराओं की वापसी का रास्ता चुनने की सलाह देती लगती है। किसानों को उनकी मिट्टी का स्वास्थ्य सुधारने में मदद करके उन्होंने वैश्विक खाद्य आपूर्ति में वृद्धि की दिशा दिखाई है। रसायन केंद्रित खेती की समस्या का समाधान करके वह उन छोटे किसानों की मदद कर रहे हैं, जो बेहतर प्रबंधन, मिट्टी के क्षरण में कमी और पोषक तत्वों के पुनर्चक्रण के रास्ते पर चलते हुए अपनी जमीन की सेहत और अपनी जरूरतों को पूरा करने के पक्षधर हैं।

इस सोच को सुभाष पालेकर जैसे कई जैविक खेती समर्थक किसानों के अनुभवों के निष्पक्ष मूल्यांकन और दीर्घकालिक संतुलित क्षेत्रवार रणनीति की दिशा में पहलकदमी के रूप में देखा जा सकता है।